Humanistic Approach of Abnormality

असामान्यता (abnormality) की व्याख्या करने के लिए मानवतावादी विचारधारा का प्रतिपादन में कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) तथा एब्राहम मैसलो (Abraham Maslow) का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मानवतावादी व्याख्या में मानव प्रकृति का एक धनात्मक तस्वीर (positive picture) पेश किया गया है जो मनोगतिकी विचारधारा से भिन्न है जिसमें मानव प्रकृति का एक ऋणात्मक तस्वीर पेश किया जाता है। मानवतावादी व्याख्या में मानव प्रकृति अनुकूल परिस्थिति होने पर दोस्ताना, सहयोगात्मक (cooperative) तथा रचनात्मक (constructive) होता है। अगर व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से विकसित होने को छोड़ दिया जाता है और यदि उसमें कोई अनावश्यक दवाब नहीं है, तो व्यक्ति तर्कसंगत (rational) तथा समाजीकृत (socialised) प्राणी के रूप में विकसित होता है। वह इतना रचनात्मक (constructive) हो जाता है कि वह न केवल अपने जैविक आवयकताओं की पूर्त्ति कर सकने में सफल होता है बल्कि अपनी क्षमताओं का उच्च स्तरीय अंशो को भी पूरा कर पाता है।

कार्ल रोजर्स का मत है कि व्यक्ति का प्रत्येक व्यवहार एक ही अभिप्रेरण (motivation) से नियंत्रित होता है जिसे वस्तुवादी प्रवृति (actualizing tendency) कहा जाता है। वस्तुवादी प्रवृत्ति से तात्पर्य अपने आप को सुरक्षित रखते हुए आगे बढ़ाने की इच्छा से होती है। इसके एक स्तर पर तो व्यक्ति सिर्फ अपने आप को जैविक आवश्यकताओं को पूर्त्ति करते हुए जीवित रखता है तो उच्च स्तर पर इस वस्तुवादी प्रवृत्ति में व्यक्ति को अपनी इच्छा एवं अभिप्रेरणाओं की जाँच करने तथा अपनी क्षमताओं तथा अंत:शक्ति को पूरा करने की प्रवृत्ति भी सम्मिलित होती है। व्यक्ति द्वारा अपने अंत:शक्ति (potential) को जाँचने तथा उसे पूरा करने की प्रक्रिया को आत्म-सिद्धि (self-actualisation) की संज्ञा दी जाती है। अगर व्यक्ति के बचपन की अनुभूतियाँ कुछ ऐसी होती हैं जिनसे उसकी आत्म-सिद्धि के मार्ग में बाधा पहुँचता है और व्यक्ति वास्तविकता से अलग हो जाता है, तो उससे व्यक्ति में असामान्य व्यवहार (abnormal behaviour) उत्पन्न हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण चिंतन, संवेग एवं मूल्य (value) आदि प्रतिकूल परिस्थिति के असामान्य व्यवहार का उपचार करने के लिए रोजर्स ने एक विशेष चिकित्सा विधि का प्रतिपादन किया है जिसे क्लयांट-केन्द्रित चिकित्सा (client-centered therepy) कहा जाता है जिसमें आत्म-सिद्धि के मार्ग में आये सभी बाधाओं के एक स्वीकार्य एवं स्नेहपूर्ण वातावरण उत्पन्न कर समाप्त कर दिया जाता है और तब रोगी चंगा होकर अपने व्यक्तित्व का विकास पूर्ववत् करने लगता है।

मैसलो (Maslow) ने मानव पकृति को मूलत: उत्तम एवं धनात्मक ही माना है तथा सभी व्यवहार को वे एक प्रमुख मौलिक अभिप्रेरक अर्थात् आत्म-सिद्धि के प्रणोद (drive) से निर्देशित मानते हैं मैसलो ने आवश्यकताओं के पाँच स्तर का प्रतिपादन किया है जो एक पदानुक्रम (hierarchy) में सुव्यवस्थित होता है। अगले स्तर की आवश्कयता की पुष्टि के लिए यह आवश्यक है कि पिछले स्तर की आवश्यकता की पूर्त्ति हो। जब व्यक्ति के प्रथम चारों स्तर की आवश्यकताओं की पूर्त्ति हो जाती है, तो वह पाँचवें स्तर की आवश्यकता अर्थात् आत्म-सिद्धि स्तर की आवश्यकता (self & actulisation need) की ओर अग्रसर होता

है। मैसलो का मत है कि जब अत्यधिक तनाव या विपरीत या संकटकालीन परिस्थिति के कारण व्यक्ति के आत्म-सिद्धि की आवश्यकता की तुष्टि के मार्ग में बाधा पहुँचती है, तो इससे उसमें असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति होती है।

स्पष्ट हुआ कि मानवतावादी दृष्टिकोण से असामान्य व्यवहार व्यक्तिगत वर्द्धन (personal growth) तथा दैहिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति स्वाभाविक प्रवृत्ति के मार्ग में रूकावट या बाधा पहुँचने से होता है। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस तरह का रूकावट या बाधा निम्नांकित कारकों के कारण होता है -

(i) प्रतिकूल सामाजिक अवस्था (unfabourable social condition) एवं दोषपूर्ण सीखना (faulty learning)

(ii) अत्यधिक तनाव (excessive stress)

(iii) अहं-रक्षात्मक प्रक्रमों (ego-defense mechanism) का अत्यधिक उपयोग जिससे व्यक्ति में वास्तविकता (reality) से सम्बन्ध टूट जाता है।

उक्त कारणें से व्यक्ति के व्यक्तिगत वर्द्धन (personal growth) का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है और उसमें असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति हो जाती है। रोजर्स (Rogers) तथा मैसलो (Maslow) के अतिरिक्त अन्य मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों जिनमें फ्रिज पर्ल्स (Fritz Perls), गार्डनर मर्फी (Gardner Murphy), विलियम जेमस (William James), गार्डन आलपोर्ट (Gorden Allport) का नाम भी उदारतापूर्वक लिया जाता है, का मत है कि अनुकूल परिस्थिति के होने पर मानव व्यवहार रचनात्मक (constructive) होने के साथ-ही-साथ दोस्ताना भी होता है और व्यक्तित्व में अपअनुकूली व्यवहार (maladjusted behaviour) के उत्पन्न होने की सम्भावना कम होती है। दूसरे तरफ आक्रमकता, क्रूरता तथा स्वार्थपरता (selfishnes) जैसे व्यवहार की उत्पत्ति कुंठा तथा मौलिक मानवीय स्वरूप की विकृति आदि से उत्पन्न होता है।

निष्कर्षतः यह कहा जाता सकता है कि मानवतावादी विचारधारा के अनुसार असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति तब होती है जब व्यक्ति अपने आप को स्वीकार करने में, अपने कार्यों का उत्तरदायित्व उठाने में तथा व्यकितगत लक्ष्यों (Personal goals) को आगे बढ़ाने में असफल रहता है।

मानवतावादी मॉडल या विचारधारा के कुछ लाभ (advantages) तथा दोष (disadvantages) है। इसके प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं -

(i) यह मॉडल मानव प्रकृति के प्रति एक आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए मानव अंतःशक्ति (human potential) पर बल डाला है तथा अपने लक्ष्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए वैयक्तिक क्षमताओं के वर्द्धन को महत्त्वपूर्ण मानता है। ऐसा दृष्टिकोण न तो व्यवहारवादी मॉडल और न ही मनोगतिकी मॉडल में देखने को मिलता है।

(ii) यह मॉउल प्रत्येक व्यक्ति के अनोखेपन (uniqueness) पर बल डालता है तथा इस बात का पूण्र भरोसा दिलाता है कि व्यक्ति निम्न पशुओं (सवूमत ंदपउंसे) का सिर्फ विस्तृत प्रारूप नहीं माना जा सकता है तथा एक व्यक्ति ठीक दूसरे व्यक्ति के बिल्कुल समान नहीं होता है।

(iii) इस विचारधारा में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अनुभूति को पर्याप्त महत्त्व दिया जाता है जिसके कारण इस मॉडल में उन लोगों के लिए आंतरिक आकर्षकता काफी अधिक होती है जो इस पर ध्यान दिये होते हैं।

इन लाभों के बावजूद इस विचारधारा के कुछ दोष (disadvantges) हैं जो इस प्रकार हैं -

(i) इस मॉडल का सबसे प्रमुख आलोचना यह है कि यह अवैज्ञानिक है और कहीं-कहीं विज्ञान-विरोधी (anti & scientific) भी दीखाता है। इसके संप्रत्यय अस्पष्ट एवं आत्मनिष्ठ (subjective) हैं जिन्हें ठीक ढंग से न तो समझा जा सकता है और न ही उससे जाँचनीय प्राक्कल्पना बनाई जा सकती हैं

(ii) इस मॉडल द्वारा असामान्यता की व्याख्या करने में क्लायंट की तात्कालिक चेतना अनुभूति (immediate conscious experience) पर इतना बल डाला जाता है जितना कि सचमुच में नहीं चाहिए। इतना ही नहीं, इस व्याख्या में अचेतन अभिप्रेरण, पुनर्बलन प्रसंभाव्यता (reinforcement contingencies), जैविक कारकों, तथा परिस्थितिजन्य प्रभावों की उपेक्षा की गयी हैं

(iii) इस मॉडल द्वारा असामान्य व्यवहार की व्याख्या करने में मानव व्यवहार के विकास की प्रक्रिया (process) पर संतोषजनक रोशनी नहीं डाला गया है। जैसे, यह कहने से कि आत्म-सिद्धि (self-actualization) की एक जन्मजात प्रवृत्ति व्यक्ति में होती है, व्यवहार के विकास की ओर तो संकेत मिलता है परंतु इसकी प्रक्रियाओं (processes) की व्याख्या नहीं होती है। सिर्फ यह कहना वस्तुवादी प्रवृत्ति (actualising tendencey) के कारण व्यक्ति का विकास होता है, कुछ इस बात के समान दीखता है कि व्यक्ति भोजन इसलिए करता है क्योंकि वह भूखा होता है। यह सच तो हो सकता है परंतु इससे यह पता नहीं चलता है कि भूख क्या है तथा इससे मानव व्यवहार किस तरह से प्रभावित होता है।

(iv) इस मॉडल में मानव व्यवहार का वर्णन तो उत्तम ढंग से किया जाता है परंतु उसके कारणों की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं होती है। यह सुनना तो अच्छा लगता है कि प्रत्येक व्यक्ति वास्तविकता के प्रत्यक्षण के अनुरूप व्यवहार करता है परंतु इससे यह तो पता नहीं चलता है कि वे कौन-कौन कारक या चर (variables) हैं जो उस व्यवहार को विकसित करने, संपोषित करने तथा परिवर्तित करने में मदद करता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद मानवतावादी मॉडल को काफी उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण बतलाया गया है क्योंकि इसके माध्यम से असामान्य व्यवहार की व्याख्या व्यक्ति के आंतरिक अनुभूतियों एवं वास्तविकता के प्रत्यक्षण के आलोक में किया जाता है।